नई सदी के उपन्यास में चित्रित सामाजिक यथार्थ

अमोल तुकाराम पाटिल*

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19501912

ABSTRACT

इक्कीसवीं सदी में जीनेवाले भारतीय समाज पर यंत्रयुग हावी हो चुका है। आज समाज के विकास को नापने का परिमाण वैज्ञानिक एवं यांत्रिक प्रगति ही है। यह भी सच है कि इक्कीसवीं सदी में मनुष्य ने अपनी कल्पना का प्रयोग अधिकतर वैज्ञानिक एवं तकनीकी आविष्कारों के लिए किया है। परिणामतः आज के इस यंत्रयुग में मनुष्य भी यंत्र के समान बनता हुआ नजर आ रहा है। तकनीकी युग में हो रही तमाम क्षेत्र की प्रगति का संचालन यंत्र द्वारा ही हो रहा है। आज का मनुष्य अपना अधिक समय यंत्र के सहचर्य में व्यतीत कर रहा है। इसलिए उसकी मानवीय संवेदना खत्म होती जा रही है। आज का मनुष्य यंत्र पर सवार होकर मनुष्य को पीछे छोड़कर गति से दौड़ रहा है। चाँद पर, मंगल पर न जाने अंतरिक्ष में और कई ग्रहों पर जाने की कवायद कर रहा है किंतु उसके पास बैठे हुए आदमी को ही वह भूलता हुआ नजर आ रहा है।

KEYWORDS: सामाजिक, इक्कीसवीं, उपन्यास, नारी, वर्तमान, यथार्थ ।

* **डॉ. अमोल तुकाराम पाटिल**, सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, शिवानंद महाविद्यालय, कागवाड.

प्रस्तावना:

वर्तमान यंत्रयुग में जीवन-यापन करने वाले संवेदनाहीन एवं मूल्यहीन मनुष्य को जीवन मूल्यों की ओर लाने का भरसक प्रयास हिंदी उपन्यासों द्वारा हो रहा है। आज प्रचुर मात्रा में उपन्यास लिखे जा रहे हैं। इन उपन्यासों द्वारा मनुष्य के मन में मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना करने की कोशिश की जा रही है। सन् 2000 के पश्चात् प्रकाशित ऐसे ही महत्त्वपूर्ण इक्कीस उपन्यासों में मानवीय संवेदना को ध्यान में रख कर कई युवा आलोचकों द्वारा आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया गया है। जो वाकई सराहनीय है। इस कृति में विशेषतः सांप्रदायिक सौहार्द, दलित चेतना, नारी शोषण, वेश्या समस्या और बदलते जीवन मूल्य आदि पर ध्यान केंद्रित किया है।

उपन्यास में चित्रित सामाजिक यथार्थ:

प्राचीन काल से लेकर आज तक नारी अनेक वर्जनाओं की शिकार होती आ रही है। स्त्री - पुरुष समाज के दो अपरिहार्य अंग हैं। जो एक दूसरे के पूरक हैं। यही विपरीत लिंग मिलकर सृष्टि का निर्माण करते हैं। दोनों एक- दूसरे के पूरक होने के बाद भी समाज ने दोनों के लिए अलग-अलग मापदंड निर्धारित किए हैं। पुरुष को खुली छूट दे रखी है मगर नारी पर अनेक प्रतिबंध लगा रखे हैं। इस से नारियों के विकास रुकते नहीं मगर उसे बाधित अवश्य करते हैं। समाज में नारी को देवी की तरह पूजते हैं। दूसरी तरफ उसे दानवी, कुलटा, राक्षसी आदि गुणों से युक्त कहकर उसकी भर्त्सना भी करते हैं।

आज की महिला पुरुष के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ चुकी है। कई बार स्त्री के सामने ऐसा वातावरण बन जाता है कि वह स्त्री है उसे उस बात को प्रतीति दिया जाता है। नारी के बिना मनुष्य अधूरा है। स्त्री समाज, परिवार तथा देश का भविष्य बना सकती है। वह केवल जन्मदात्री न होकर प्रेरणादायी भी होती है। महिला आज सभी क्षेत्र में अग्रसर है। प्रेमचंद जी के अनुसार "मैं प्राणियों के विकास में उसको पुरुषों से श्रेष्ठ समझता हूँ। जैसे प्रेम त्याग और श्रद्धा। हिंसा संग्राम तथा कलह से श्रेष्ठ है। स्त्री-पुरुष से उतनी ही श्रेष्ठ है जितना प्रकाश अंधेरे से"।१ स्त्री विमर्श स्त्री के अस्तित्व व उसकी अस्मिता की खोज का प्रयत्न करता है। नारी को आत्म निरीक्षण का विमर्श है।

मैत्रेयी पुष्पा लिखित 'अगनपायी' उपन्यास में स्त्री-विमर्श का चित्रण किया है। इस उपन्यास में भुवन को भारतीय समाज की सामन्ती प्रथा का शिकार होना पड़ता है। अपने पिता के देहांत के कारण पढ़ाई छोड़ती है। माँ की सहायता के लिए वह बाहर जाती है। जब वह लड़कों सा व्यवहार करती है। तब भुवन डाँट मिलती है। उसकी शादी अर्द्ध विक्षिप्त व्यक्ति कुँवर सिंह से कर दिया जाता है। "किसी की खाता नहीं सब में उसे दूल्हे के रूप में सजा-धजा देखा है, वह किसको पागल लगता था? अब देख कोई, बट्टी पर बट्टी साबुन खत्म करता रहता है। हाय पाँवों की खाल फूल जाती है। उसका मैल छूटता नहीं। दस बार थैली मंजवाएगा, वह शुद्ध होती नहीं।"२ इस उपन्यास की नायिका भुवन को

अनमेल विवाह का शिकार होना पड़ता है। उसमें पति मर जाता है। जब उसे सती होने के लिए मजबूर किया जाता है। वह भाग निकलती है। कोर्ट में अपने पति के चल-अचल संपत्ति का वारिस होने की घोषणा करती है।

संजीव बख्शी के 'भूलन कांदा' उपन्यास में अपने अबूझ अर्थ के कारण समझने में उलझन पैदा करता है। उपन्यास के प्रारम्भ में लेखक ने भूलन कांदा के बारे में स्पष्ट करते हुए लिखा है, 'छत्तीसगढ़ के जंगलों में भूलन कांदा देखा जाता है। गलती से किसी का पैर पड़ गया इस पर तो वह भटक जाता है। दिखता है तो सब ओर पेड़ ही पेड़, रास्ता नहीं दिखता। कोई निकलता है गाँव का इधर से समझ जाता है, यह भूलन का काम है। वह पास आकर उसे बस छू लेता है कि फिर से सब कुछ वैसा का वैसा दिखने लगता है। यह किंवदंती नहीं सत्य है। यह अजीब सा लगता है, पर यह मौजूद है छत्तीसगढ़ के जंगलों में।' इस सूचना के बाद जब लेखक कथा प्रारम्भ करता है, तो पाठकों का पाँव अनायास भूलन पर पड़ जाता है और तभी वह भूलन-लोक से वापस लौट पाता है, जब उपन्यास समाप्त होता है। 'भूलन कांदा' दरअसल सीधे-सादे आदिवासियों की सहज कथा उन्हीं की ठेठ भाषा और स्थानीय शब्दावली में उनकी जीवन-शैली को गहराई और प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत करता है।

निर्मला भुराडिया रचित 'गुलाम मंडी' उपन्यास में एक ओर वैश्विक धरातल पर हो रही गर्ल ट्राफिकिंग का पर्दाफाश किया है वहीं दूसरी ओर तृतीय लिंगी लोगों के जीवन से संबंधित संवेदनशील पक्षों को उकेरा है। उन्होंने अंगूरी के माध्यम से किन्नर समुदाय की पीड़ा को अभिव्यक्त किया है। कल्याणी इस उपन्यास का प्रमुख स्त्री पात्र है। एक प्रसंग में वह अंगूरी से कहती है कि श्राद्ध के दिनों में कौवों को खीर-पूरी खिलाते हैं तो अंगूरी जो किन्नर है अपने समाज के सच को व्यक्त करने के लिए अपनी तुलना कौवे से करते हुए कहती है- 'श्राद्ध के दिनों में ही न ! स्वार्थ रहता है न तुम्हारा। दिन में जो कहीं कौवा आकर बैठ जाए न तुम पर, तो नहाओगी-धोओगी, अपशकुन मनाओगी। जैसे हम ना, तुम्हारे शादी-ब्याही हो तो नाचेगी-गाएगी, शकुन पाएगी। मगर यूं जो रास्ते में आ पड़ी ना हम, तो हिजड़ा कहकर धिक्कारेगी।' अंगूरी की यह पीड़ा केवल उसकी नहीं बल्कि समूचे किन्नर समुदाय की पीड़ा है।

ममता कालिया का "दुक्खम-सुकखम" उपन्यास में ब्रज क्षेत्र का जन जीवन को उजागर किया गया है। इस में बेटी के जन्म के कारण इंदु रुआँसी हो जाती है। उनके घर में बेटी के जन्म की कोई खुशियाँ नहीं मनायी जाती है। इंदु के जीवन का दुःख बेटियाँ है। उसके लिए बेटा सुख का पिटारा है। वह चाहकर भी अपनी परिस्थिति बदल नहीं सकती है। यह भारतीय परिवार की पारंपरिक और रूढ़िवादी को दर्शाया है। साथ ही इस में लीला के माध्यम से अनमेल विवाह को रेखांकित किया है। लीला अनमेल विवाह की शिकार होती है।

प्रदीप सौरभ कृत उपन्यास 'मुन्नी मोबाइल' महत्त्वपूर्ण रचना मानी जा सकती है। इसके दो मुख्य प्रसंग हैं, एक साधारण सी घरेलू नौकरानी मुन्नी

की महत्त्वाकांक्षाओं का वह सफर जो उसे उसके व्यक्तित्व की दृढ़ता की ऊर्जा से उसे डॉन बनाता है और बाजार के शातिर हाथ जो उसकी हत्या कर देते हैं और दूसरा प्रसंग नैरेटर/लेखक/पत्रकार आनंद भारती के आँखों देखे गोधरा कांड के तत्काल बाद गुजरात की ज़मीन पर राजनीति के सांप्रदायिक चेहरे, गुंडागर्दी, मनुष्यता की खुलेआम हत्या और इस सबके पीछे मौजूद सुनियोजित राजनीतिक सोच का है। मुन्नी संघर्ष करती है आगे बढ़ने के लिए और एक बेहतर जीवन जीने के लिए। साधारण निरक्षर मुन्नी आनंद भारती के संपर्क, शिक्षा और तकनीक का महत्व समझकर अपने बच्चों को शिक्षित करती है, मकान बनवाती है और मोबाइल का उपहार लेकर अपनी दुनिया बदलने लगती है। मुन्नी गुंडों से लड़ते हुए अपनी मंजिल तक पहुँचने की यात्रा करती है और मोदी गुंडों को संरक्षण देते हुए अपनी सत्ता की यात्रा करते हैं। मुन्नी मार दी जाती है और मोदी लोकतन्त्र में लोकतांत्रिक चुनाव पर चुनाव जीतते चले जाते हैं। मोदी बहुत कम बोलते हुए दिखते हैं, मुन्नी सच्चाई के ताव में रहती है-

शरद सिंह का "कस्बाई सिमोन" उपन्यास में स्त्री शोषण, आक्रोश, स्त्री आत्म निर्णय का अधिकार, स्त्री मुक्ति, सहजीवन, स्त्री शिक्षा और स्वावलंबन आदि का वर्णन इस उपन्यास में किया है। इस उपन्यास की नायिका सुगंधा है। उसके बालमन पर अपने माता-पिता के झगड़े का प्रभाव बहुत पड़ता है। इस कारण उसका वैवाहिक जीवन पर से विश्वास उठता है। तब वह सहजीवन में रहने का निर्णय करती है। मगर उसे कस्बाई मानसिकता से जूझना पड़ता है। सुगन्धा रितिक के साथ 'लिव-इन-रिलेशन' में रहती है। उस समय उसे प्रत्येक समझौता का सामना करना पड़ता है। रितिक की पुरुष सत्ता विचारों से वह सिर्फ भोग की वस्तु बनकर रह जाती है। लेखिका ने लिखा है कि "बंधन! बंधन के जो रूप मैंने अब तक देखे थे उनमें स्त्री को ही बंधे हुए पाया था। पुरुष तो बंधकर भी उन्मुक्त था पूर्ण उन्मुक्त। वह पत्नी के होते भी एक से अधिक प्रेमिकाएँ रख सकता था, रखैल रख सकता था, यहाँ-वहाँ फ्लर्ट कर सकता था, फिर भी समाज की दृष्टि में वह क्षमा योग्य ही बना रहता"।३ इस से यह स्पष्ट होता है कि पुरुष पूर्ण रूप से स्वतंत्र होता है बल्कि नारी के लिए सभी क्षेत्र में बंधना पड़ता है। नारी को शादी होने के बाद एक बात सिखाई जाती है। पति ही सबकुछ होता है। जीवन पर्यन्त उसी की सेवा करना है। इस प्रकार स्त्री को मानसिक रूप से तैयार किया जाता है। इस तरह नारी का शोषण सदियों से होता रहा है। नारी शोषण समाज में कई प्रकार से होता है।

सिम्मी हर्षित कृत 'रंगशाला' उपन्यास के अंतर्गत परिवार से जुड़े स्त्री की अनेक समस्याओं में उनकी भावनाओं के विचारों को व्यक्त किया है। उपन्यास की नायिका राधिका के द्वारा समाज में रचित पुरुष जाति को ललकारा है। पुरुष जो भी करे उसकी कोई पूछताछ नहीं होगी। मगर नारी के विषय में वह नहीं चलेगा। "यानी कि आपके पुरुष अहं को शुद्ध प्रेम चाहिए अछूती पत्नी चाहिए, उसकी अभंग भावना चाहिए पर औरत के लिए एकनिष्ठ अनेक निष्ठा शुद्ध अशुद्ध कुछ भी चलेगा। कुछ नहीं भी चलेगा।"४ इस प्रकार स्त्री की

समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है।

स्त्री विमर्श के विविध आयाम में प्रमुख रूप से परम्परागत स्त्री के बारे में लेखिकाओं की अभिव्यक्ति सामने आती है। "पचकौड़ी" उपन्यास में वसुंधरा डॉक्टर बनना चाहती है। साथ ही, पी. एम. टी. की परीक्षा भी देना चाहती है। परन्तु अपने पिता उदय प्रताप सिंह को मंजूर नहीं है। "हमारे खानदान में लड़कियाँ नौकरी नहीं करती हैं।"५ इस प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में महिला को अपनी इच्छा या रुचि के अनुरूप शिक्षा लेने का अधिकार नहीं है। अपने पिता के निर्णय पर ही शिक्षा लेना होगा। आज भी लोगों के मन में बिटियाँ विवाह कर दूसरे के घर जाएँगी। बेटियों को उच्च शिक्षा देकर हमें क्या लाभ होगा।

निष्कर्ष:

अंत में कहा जा सकता है कि नई सदी के उपन्यास ने नारी की समस्याओं उसकी व्यथा-कथा मुक्ति आदि को लेकर सशक्त रूप से अपनी लेखनी चलाई है। स्त्री जीवन में सदियों से समस्या व्याप्त है। केवल समय के अनुरूप समस्याओं में परिवर्तन आया है। सभी समस्याओं से लड़ते हुए स्त्री को स्वयं ही स्वस्थ नैतिक पृष्ठभूमि का निर्माण करने का हौसला बढ़ाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ:

1. प्रो. प्रमोद चौधरी - उपन्यासकार राजी सेठ - पृ. सं. 34
2. मैत्रेयी पुष्पा - अगनपायी - पृ. सं. 73
3. शरद सिंह - कस्बाई सिमोन - पृ. सं. 31
4. सिम्मी हर्षिता - रंगशाला - पृ. सं. 86
5. शरद सिंह - पचकौड़ी - पृ. सं. 73